Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Uttarakhand – RO/ARO

समीक्षा अधिकारी / सहायक समीक्षा अधिकारी

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

भाग - 2

उत्तराखंड का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	उत्तराखण्ड के भौगोलिक प्रदेश	1
2	उत्तराखण्ड का जिला दर्शन	6
3	उत्तराखण्ड की जलवायु	26
4	उत्तराखण्ड का अपवाह तंत्र	30
5	उत्तराखण्ड की प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्यजीव	37
6	उत्तराखंड का इतिहास	48
7	उत्तराखण्ड की प्राचीन जनजातियाँ	55
8	उत्तराखण्ड के प्रमुख राजवंश	59
9	प्रशासनिक व्यवस्था (ब्रिटिश कुमाऊँ, गढ़वाल)	72
10	ब्रिटिश काल के दौरान उत्तराखंड में भूमि व्यवस्था एवं वन प्रबन्धन	74
11	टिहरी रियासत शासन	77
12	उत्तराखंड में राष्ट्रीय आन्दोलन	81
13	उत्तराखंड के आन्दोलन	88
14	उत्तराखंड के लोकगीत	93
15	उत्तराखंड के लोकनृत्य	95
16	उत्तराखंड के लोक नायक एवं रंगकर्मी	97
17	उत्तराखंड के लोक वाद्य यन्त्र	109
18	उत्तराखंड की चित्रकला	110
19	उत्तराखंड की वेशभूषा एवं खान पान	112
20	उत्तराखंड की शिल्पकला एवं बोलियाँ	115
21	उत्तराखंड का धार्मिक परिदृश्य	118
22	उत्तराखंड के प्रमुख मेले एवं त्यौहार	125
23	परिवार, विवाह, नातेदारी	129

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	उत्तराखण्ड की राजनीतिक एवं दलीय व्यवस्था	136
25	राज्य सरकार की सरंचना	141
26	जिला एवं तहसील स्तरीय प्रशासन	155
27	अन्य आयोग	158
28	उत्तराखंड राज्य के राजनैतिक एवं स्थानीय स्वशासन एवं लोकनीति	164
29	शिक्षा, चिकित्सा व्यवस्था एवं पत्रकारिता का विकास	181
30	राज्य की अर्थव्यवस्था	187
31	जाति व्यवस्था एवं गतिशीलता, SC, ST, OBC	190
32	ग्रामीण शक्ति संरचना एवं नगरीकरण एवं औद्योगीकरण	196
33	उत्तराखंड में पर्यटन	203
34	राज्य में जनांकिकी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य	205
35	शहरीकरण	216
36	स्मार्ट सिटीज	222
37	जनजातीय निवास स्थान	227
38	विविध	230
39	कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र	236
40	राज्य में उद्योग, खनिज एवं पर्यटन	244
41	राज्य में परिवहन तंत्र	253
42	राज्य में ऊर्जा का परिदृश्य	255
43	उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र से पलायन परिमाण, चुनौतियां और नीतिगत विकल्प	257
44	उत्तराखंड में आपदा	265
45	जल संकट	270
46	उत्तराखंड में मानव विकास	272

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
47	उत्तराखंड बजट 2024–25	286

1 CHAPTER उत्तराखण्ड के भौगोलिक प्रदेश

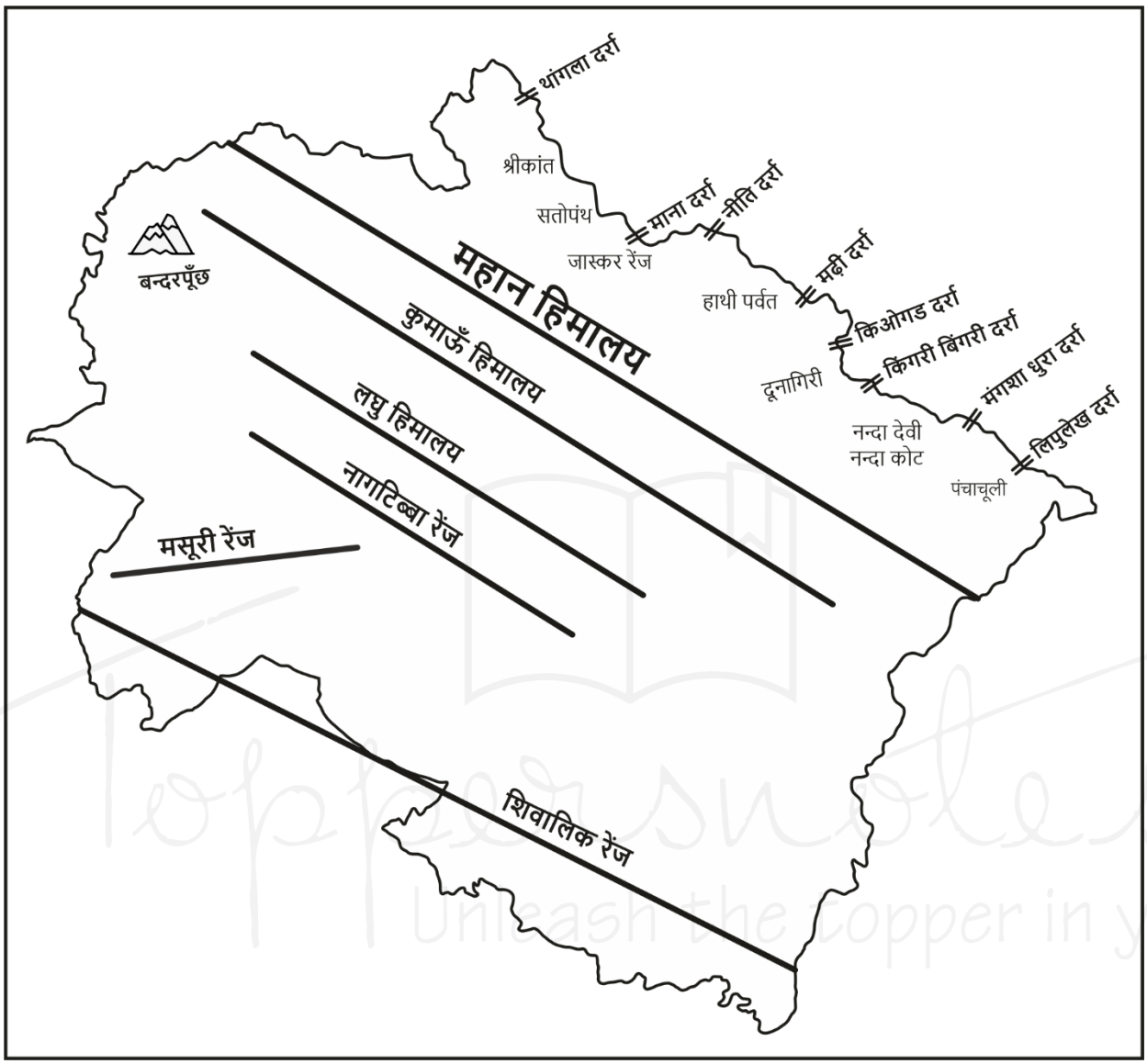

हिमालय (पर्वतीय क्षेत्र)

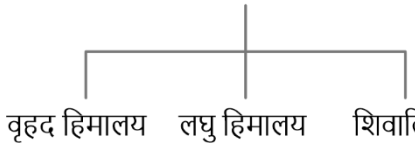

हिमालय (पर्वतीय क्षेत्र)

वृहद हिमालय

- वृहद् (महान) हिमालय सदैव बर्फ से ढके रहने के कारण इसे 'बर्फीला हिमालय' अथवा 'हिमाद्रि' कहा जाता है।
- यह भारत का प्राचीनतम हिमालय है।
- यह 4500 मीटर से 7817 मीटर तक ऊँचा है, किंतु इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर तक है।

UK FRO (Pre) Exam 2015

- वृहत्तर हिमालय का फैलाव उत्तराखण्ड के 6 जिलों में है - चमोली, पियौरागदु, उत्तरकाशी, टिहरी, रूद्रप्रयाग, बागेश्वर।

UK FRO (Pre) Exam 2015

- 7817 मीटर ऊंची नन्दा देवी (पश्चिमी) राज्य की सर्वोच्च चोटी यहाँ अवस्थित है।
- हिमालय की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ (माउंट एवरेस्ट, कंचनजंघा आदि) इसी पर्वत श्रेणी में पायी जाती हैं।
- हिमालय की इस श्रेणी का निर्माण सबसे पहले हुआ था और इसका कोर ग्रेनाइट का बना हुआ है|

- इस श्रेणी अधिकतम ऊंचाई इसके मध्यभाग में है जो नेपाल देश में स्थित है।
- सदैव बर्फ से ढके रहने के कारण यहाँ जनघत्व भी कम और कृषि उत्पादन भी नगण्य अवस्था में है।
- मुख्य जनजाति- भोटिया (पेशा - व्यापार और पशुपालन)
- हिमालय की इस श्रेणी का निर्माण सबसे पहले हुआ था और इसका कोर ग्रेनाइट का बना हुआ है।
- यहाँ शीतोष्ण कटिबंधीय वनस्पति(चमोली स्थित फूलों की घाटी) पाई जाती है।

नोट

उत्तराखंड हिमालय का वह भाग है जहाँ की शैल परतें बहुत ज्यादा वलित है यहाँ की शैल समूह का वलित स्तर क्षेपण से बुरी तरह क्षतिग्रस्त है। सबसे ज्यादा भाग में शैल, फिलाइट आदि कमजोर शैल का बाहुल्य है। दोनों शैल समूह कई भागों में अपक्षरण से प्रभावित है। पहाड़ की ढालों में वनस्पति अनेक कारणों से समाप्त हो गई हैं जिससे शैल के ऊपर की अपक्षय शैल समूह गुरुत्वाकर्षण के कारण स्वयं भी नीचे खिसकना शुरू कर देती है। बरसात का पानी ऐसे स्थानों में बहुत बड़े-बड़े भूस्खलनों का कारण बन जाता है।

ट्रांस हिमालय, महान हिमालय के उत्तर में उसके समांतर तक फैला हुआ है, इसे तिब्बत हिमालय कहा जाता है। इसका अधिकांश भाग तिब्बत में शामिल है। ट्रांस हिमालय में जास्कर श्रेणी है जिसमें उत्तराखण्ड का क्षेत्र सम्मिलित है। यह भौगोलिक दृष्टि से ट्रांस हिमालय का वृष्टि छाया प्रदेश के अंतर्गत आता है जो शुष्क वर्षा विहीन क्षेत्र है। **ASWO-18**

पर्वत चोटियां **JATC-21/PSCL-21/UK HC-12**

नंदा देवी (7817मी) – चमोली **UKPSCL-21**

कामेट शिखर (7756 मी)- चमोली **ACF/Abkari Shipahi-21**

चौखम्बा पर्वत (7138 मी.) - चमोली

त्रिशूल पर्वत (7120 मी.) - चमोली

केदारनाथ (6968 मी.) - रुद्रप्रयाग

पंचाचूली पर्वत (6904 मी.) – पिथौरागढ़ **JATC-21**

नन्दाकोट पर्वत (6861 मी.) - चमोली

भागीरथी पर्वत (6856 मी.) – उत्तरकाशी

ऐलीफेंट पर्वत (6727मी) – चमोली **Guard(Secret)-21**

बंदरपूंछ पर्वत (6320 मी.) – उत्तरकाशी

: श्रीकंट पर्वत शिखर (6133 मी.) – उत्तरकाशी **UK Group-15**

नारायण पर्वत (5965 मी.) – चमोली

एबांट पर्वत (1981मी.)- चंपावत **Asst Lipik-2018**

कामत पर्वत – चमोली **Storekeeper -17**

चाइना पीक – नैनीताल - **Amin Postel-2017**

जैलंग पर्वत – चमोली **Asst Lipik -2018**

दर्रे तथा उनसे जुड़ने वाले क्षेत्र **JATC-21**

जुड़ने वाले क्षेत्र	दर्रे का नाम
हिमाचल प्रदेश – उत्तरकाशी	श्रृंगकंठ
उत्तरकाशी – तिब्बत **Hostel Adhikshhak-21**	थांगला, मुलिंग-ला, ब्यांग-ला
उत्तरकाशी – चमोली	कालिंदी
चमोली – तिब्बत	नीति, माणा, शल-शल, बालचा, धुरा, लमलंग
चमोली – पिथौरागढ़ **Asst Office-16**	बाराहोती, मार्चयोक, लातुधूरा
पिथौरागढ़ – तिब्बत **JATC-21**	लिपूलेख, मिलम, दारमा, किंगरी विंगरी, ऊंटा जयंती
पिथौरागढ़ - बागेश्वर	ट्रेलपास
पिथौरागढ़ – चंपावत	लापसा-धूरा
बागेश्वर – चमोली	सुंदरढूंगा

ग्लेशियर (हिमनद)

पिथौरागढ़	मिलम, रालम, पोटिंग, नामिक, पिनोरा
चमोली	सतोपंत, दूनागिरी, तिपराबमक
बागेश्वर	पिण्डरी, सुंदरढूंगा, कफनी, मैकतोली
उत्तरकाशी	गंगोत्री, यमनोत्री, डोरियानी
टिहरी	खतलिंग
रुद्रप्रयाग	चौराबाड़ी

- **कैलाश मानसरोवर यात्रा -**
  - कैलाश मानसरोवर यात्रा के तीन मार्ग है।
  - लिपुलेख भार्ग (उत्तराखण्ड), सिक्किम मार्ग, काठमांडू मार्ग। **UK RO-16/Abkari-21/ UK Competitive Exam-21**
  - 'लिपुलेख मार्ग से कैलाश - मानसरोवर यात्रा के दौरान भारत में अंतिम स्थान लिपुलेख दर्ग है।
  - यह दर्री 17,000 फीट की ऊँचाई पर भारत, बीन और नेपाल के त्रि-जंक्शन के करीब उत्तराखंड में स्थित है।
- **कलियासौड भूस्खलन क्षेत्र** **UK PCS-16**
  - श्रीनगर और रुद्रप्रयाग के मध्य में
  - उत्तराखण्ड के पाँच जिले भूकम्प के लिहाज से अति संवेदनशील हैं-रुद्रप्रयाग, बागेश्वर, पिथौरागढ़, चमोली और उत्तरकाशी। **ACF-2019**
- **टिफिन टॉप**
  - टिफिन टॉप उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले में स्थित हैं। **Irrigational-17**
  - टिफिन टॉप में हिमालय के साथ-साथ पड़ोसी देश का एक उत्कृष्ट दृश्य है।
  - झीलों से घिरे होने के कारण नैनीताल को लेक डिस्ट्रिक्ट के नाम से जाना जाता हैं।
- **उत्तराखंड का पामीर**
  - दूधातोली को उत्तराखंड का पामीर कहा जाता है। **Amin Postel-2017**
  - दूधातोली उत्तर-दक्षिण दिशा में एक मध्य हिमालय पर्वत श्रृंखला है, जो उत्तराखंड में पौड़ी गढ़वाल जिले की थैलीसैंण तहसील के पास से शरू होती है।

मध्य/लघु हिमालय

- यह वृहत हिमालय के दक्षिण में लगभग समानांतर पूर्व से पश्चिम दिशा में स्थित है। **RO/ARO-16**
- यह 1800-4500 मी. तक ऊँचा तथा इसकी चौड़ाई उत्तराखंड राज्य में 70-100 किमी. (औसत चौड़ाई लगभग 50 किमी) तक है।
- यहाँ धौलधार, पीर-पंजार, शिवा, नाग, महाभारत, मसूरी आदि की पहाड़ियाँ अवस्थित है।
- पर्वतीय क्षेत्र- टिहरी, पोड़ी, चकराता, मसूरी, नैनीताल, लैंसडोन आदि।
- कश्मीर की घाटी, कांगड़ा की घाटी और कुल्लू की घाटी आदि लघु हिमालय में ही स्थित है|
- लघु हिमालय पर्वतीय पर्यटन केन्द्रों के लिए प्रसिद्ध है|
- यहाँ पर शीतोष्ण कटिबंधीय वनस्पति(बांज, बुराँस, देवदार, चीड़, आदि) पाई जाती है।
- इस क्षेत्र में व्यापार की तुलना में कृषकीय कार्य(खाद्यान्न उत्पादन - धान, गेहूँ, मक्का, मंडुवा, झंगोरा) अधिक होता है।
- यहाँ कुमाऊँ के क्षेत्र में अनेक प्रकार की सब्जियों और फलों (सेब, अखरोट, नाशपाती-शीतोष्ण कटिबंधीय फल) का भी उत्पादन होता है।
- अपने आर्थिक महत्व के कारण वृहत् हिमालय की तुलना में यहाँ जनसँख्या जनघनत्व अधिक है।
- भीमताल, सातताल, नौकुचियाताल, खुर्पाताल, नैनीताल, हरीशताल एवं लोखमताल आदि बड़े आकार के झील हैं।
- लघु हिमालय भूकंप की दृष्टि से संवेदनशील है।

शिवालिक

- यह लघु हिमालय के दक्षिण में इसके समानांतर पूर्व – पश्चिम दिशा में स्थित है।
- इसकी ऊँचाई 700-1800 मी. तक तथा चौड़ाई 10-20 किमी. तक है।
- शिवालिक श्रेणी हिमालय की अन्य श्रेणियों की तुलना में बहुत छोटे आकर की है, इसलिए इसे उप – हिमालय (Sub-Himalayas) भी कहते है।
- इस श्रेणी का निर्माण अवसादी और असंगठित चट्टानों से हुआ है।
- यहाँ पाए जाने वाले खनिजों में चूना पत्थर, बलुवा, संगमरमर, जिप्सम, आदि खनिज शैल शामिल हैं।
- हिमालय के इसी भाग में जीवाश्म पाये जाते हैं।
- शिवालिक भूस्खलन की दृष्टि से संवेदनशील है।
- यहाँ साल, सागोन, शीशम, चीड़, जैसे वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।
- शिवालिक के पर्वतपादों के पास जलोढ़ पंख या जलोढ़ शंकु पाये जाते हैं|
- लघु व शिवालिक हिमालय के मध्य पायी जाने वाली घाटी को 'दून' कहा जाता है| **UK PCS-2014-15**
- देहारादून, कोटलीदून, पाटलीदून प्रसिद्ध दून घाटियों के उदाहरण हैं।
- कृषकीय कार्य हेतु शिवालिक और मध्य-हिमालय के मध्य 350-750 मीटर ऊँची उपजाऊ चौरस घाटियाँ पाई जाती हैं।
- जो कृषकीय कार्य हेतु उपजाऊ हैं। इन चौरस घाटियों को पश्चिम में दून तथा पूर्व में द्वार कहते हैं। (जैसे- देहरादून, पछवादून, हरकीदून, कोटद्वार आदि)
- इस क्षेत्र का देहरादून जिला सर्वाधिक उपजाऊ और अनुकूल जलवायुगत परिस्थितियों के कारण सर्वाधिक जनसंख्या बसाव वाले जिलों में से एक है।

मैदान क्षेत्र

मैदानी क्षेत्र

1. **भाबर क्षेत्र**
   - भाबर क्षेत्र हिमालय क्षेत्र की शिवालिक पहाड़ियों के दक्षिण छोर पर स्थित है।
   - यह हिमालय की तलहटी और शिवालिक पहाड़ियों के निचले स्तर पर पड़ता है।
   - यहाँ हिमालय से उतरती हुई नदियाँ अपने साथ बड़े-बड़े कंकड़-पत्थर (अवसाद) लाकर जमा कर देती हैं।
   - यह भाग बहुत ही उबड़-खाबड़ होने के चलते कृषि की दृष्टि से अनुपजाऊ होता है।
   - भाबर क्षेत्र में नदियाँ विलुप्त-सी लगती हैं।
   - इसका पूर्व में ऊधमसिंह नगर से पश्चिम में देहरादून तक 10-12 किमी. चौड़ी पट्टी के रुप में विस्तार है।
2. **तराई क्षेत्र**
   - यह भाबर के दक्षिण में स्थित, 20 से 30 किलोमीटर की चौड़ी पट्टी वाला दलदली क्षेत्र है
   - वर्षा की अधिकता के कारण मिट्टी में नमी अधिक होती है जिसके परिणामतः यह कृषि की दृष्टि से उपजाऊ है।
   - इसका विस्तार हरिद्वार, पोड़ी और ऊधमसिंह नगर में है।
   - यहाँ घने जंगलों का विस्तार है।
   - इस क्षेत्र की नदियों में मानसून के समय प्राय: बाढ़ आ जाती है।
   - कुमाऊँनी में तराई से ही उतपन्न शब्द 'तिराई' पहाड़ से नीचे की चीजों के लिए उपयोग होता है।
3. **गंगा का मैदान**
   - गंगा नदी का वह दक्षिणीवर्ती भाग जिसका निर्माण गंगा नदी के अवसादों से हुआ है।
   - दक्षिणी हरिद्वार का मैदानी भाग इसके अंतर्गत आता है।

प्रमुख गिरिद्वार (दर्रे) UK PCS-2009-10

क्र.सं.	दर्रे का नाम	सिंधुनल से ऊँचाई	स्थान
1.	लिपुलेख - गुंजी SWO-17/VDO-12	5334 मीटर	पिथौरागढ़-तिब्बत
2.	दारमा – नवीधुरा	5800 मीटर	पिथौरागढ़-तिब्बत
3.	मानस्या-धुरा	5500 मीटर	पिथौरागढ़-तिब्बत
4.	लम्पिया-धुरा JATC-21	5600 मीटर	पिथौरागढ़-तिब्बत
5.	लेविधुरा	5580 मीटर	पिथौरागढ़-तिब्बत
6.	बालचा धुरा	5400 मीटर	चमोली-तिब्बत
7.	ऊँटा जयन्ती - किंग्री विंग्री	5000 मीटर	पिथौरागढ़-तिब्बत
8.	माणा-डुग्रीला SGP-16	5608 मीटर	चमोली-तिब्बत
9.	नेलंग- सागचोकला	5700 मीटर	उत्तरकाशी-तिब्बत
10.	थागला	6079 मीटर	उत्तरकाशी-तिब्बत
11.	ट्रेलपास	5356 मीटर	बागेश्वर – पिथौरागढ़
12.	नीती	5000 मीटर	चमोली-तिब्बत
13.	मुलिंग-ला	5669 मीटर	उत्तरकाशी-तिब्बत
14.	श्रीकंठ	1500 मीटर	
15.	लमलंग	4268 मीटर	चमोली-तिब्बत
16.	चोरी-होती	5044 मीटर	चमोली-तिब्बत
17.	शलशलला	5044 मीटर	चमोली-तिब्बत
18.	गौतिधुरा		पिथौरागढ़
19.	खगिया सुम्मा		पिथौरागढ़
20.	नवी धुरा		पिथौरागढ़
21.	ऊंट धुरा		पिथौरागढ़
22.	क्योगढ़		पिथौरागढ़
23.	घटमिला		पिथौरागढ़
24.	चिरवटिया		चमोली
25.	तुनजान-ला		चमोली
26.	सराही ला		चमोली
27.	मोकधुरा		चमोली
28.	करी		चमोली
29.	लेवांग		चमोली
30.	बरासु		उत्तरकाशी
31.	सगथोकला		उत्तरकाशी
32.	सिनला		दारभा व्यास वैली
33.	लाझा		चंपावत-पिथौरागढ़
34.	सुंदर दुगा		बागेश्वर चमोली
35.	माच्योक		चमोली - पिथौरागढ़
36.	ब्यांग्ला		उत्तरकाशी-तिब्बत
37.	काजिंदी		उत्तरकाशी-चमोली
38.	टोपी ढुंगा		चमोली-पिथौरागढ़
39.	डुंगरला		उत्तरकाशी-तिब्बत
40.	म्युंदर		उत्तरकाशी-तिब्बत
41.	कोई		उत्तरकाशी-तिब्बत
42.	छारजियां		उत्तरकाशी-तिब्बत
43	मुलिंग-ला Asst Lipik-2018		उत्तरकाशी-तिब्बत

राज्य के प्रमुख हिमनद

- **गंगोत्री हिमनद –** उत्तरकाशी जिले में स्थित यह राज्यका सबसे बड़ा हिमनद है। यह 30 किमी. लम्बा व 2 किमी. चौड़ा है। इस हिमनद के गोमुख नामक स्थान से भागीरथी नदी निकलती है।
- **पिण्डारी हिमनद –** बागेश्वर, पिथौरागढ़ एवं चमोली जिले में स्थित राज्य का दूसरा बड़ा हिमनद है। यह 30 किमी. लम्बा व 400 मी. चौड़ा है। अलकनन्दा की सहायक पिण्डार नदी इसी से निकलती है।
- **मिलन हिमनद –** पिथौरागढ़ के मुनस्यारी तहसील में स्थित इस हिमनद की लम्बाई 16 किमी. है।इस हिमनद से पिण्डर की सहायक नदी मिलन व काली की सहायक गौरीगंगा नदियां निकलती है।
- **खतलिंग हिमनद –** केदारनाथ से लगभग 10 किमी. पश्चिम स्थित यह हिमनद जोगिन, स्फटिक प्रिस्वार, बार्त कौटर व कीर्ति स्तंभ चोटियों के मध्य में स्थित है। भिलंगना नदी इसी से निकलती है।

- **चौराबाड़ी हिमनद –** केदारनाथ मंदिर से लगभग से लगभग तीन किमी. पूर्व में स्थित इस हिमनद की लम्बाई 14 किमी. है। इस हिमनद सेअलकनन्दा की सहायक मदांकिनी नदी इसी से निकलती है।
- **बंदरपुंछ हिमनद –** यह हिमनद उत्तरकाशी जिले में बंदरपुंछ पर्वत के उत्तरी ढाल पर है। इसकी लम्बाई 12 किमी. है।

प्रमुख हिमनंद सूची

State Observer -2017/ Personal Ass-2016

हिमनंद	**जगह**
डोकरियानी हिमनद **JATC-2021**	भागीरथी बेसिन
दूनागिरी Abkari shipahi -2021	चमोली
गंगोत्री (साबसे बड़ा) **UKPCS-2006-07**	उत्तरकाशी
मिलम **UKHC-2012**	पिथौरागढ़
पोटिंग	पिथौरागढ़
नामिक	पिथौरागढ़
पिण्डारी	बागेश्वर
चौराबाड़ी Cartographer/ Draftman-2017	**रूद्रप्रयाग**
कफनी Irrigational-2017	बागेश्वर
कीर्ति Ass Lipik -2018	उत्तरकाशी
सुन्दरढुंगा VDO-2018	बागेश्वर
रालम	पिथौरागढ़

- 2017 **में उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय**, **नैनीताल ने गंगोत्री ग्लेशियर को जीवित प्राणी का दर्जा दिया-**
- इसके अतिरिक्त रालम, सतोपंथ, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, कफनी आदि अनेको हिमनद अवस्थित है।

राज्य की घाटियाँ

1.	फूलों की घाटी- बद्रीनाथ, हेमकुंड
2.	हरकीदून घाटी- हरकीदून, उत्तरकाशी
3.	स्कंद घाटी- अगस्त्य मुनी- रुद्रप्रयाग
4.	केदारघाटी- केदारनाथ- गौरीकुंड
5.	विडर घाटी ग्वालदम, कर्णप्रयाग
6.	गंगा घाटी - गंगोत्री, देवप्रयाग
7.	अलकनंदा घाटी- ग्वालदम, कर्णप्रयोग
8.	भिलंगना घाटी- बूढ़ाकेदार, टिहरी
9.	गगासघाटी- बग्वाली पोखर अल्मोड़ा
10.	मढमहेश्वर- उखीमठ
11.	उर्गम घाटी- चमोली, जोशीमठ
12.	निजमुल्ला घाटी- गोपेश्वर
13.	हेवल घाटी- चंबा टिहरी
14.	तोताघाटी- ऋषिकेश
15.	दून घाटी- देहरादून, मसूरी **JA/CO -17**
16.	टौंस घाटी- टौंस प्रभागमोरी, त्यूणी
17.	नीति घाटी- जोशीमठ, चमोली
18.	नायर घाटी- सतपुड़ी, पौड़ी
19.	दारमा घाटी- धासवुला- पिथौरागढ़
20.	माणा घाटी- चोली (बद्रीनाथ)
21.	चेनाप घाटी- जोशीमठ
22.	वारसु घाटी- उत्तरकाशी
23.	हायला घाटी- गोपेश्वर
24.	पाणा घाटी- इराणी घाटी, चमोली
25.	पैनो घाटी- रिग्वणीखास, कोटद्वार
26.	मंगवाड़स्यू घाटी- पौड़ी
27.	बांदल घाटी- जौनपुर, टिहरी
28.	वरुणा घाटी- उत्तरकाशी
29.	राड़ी घाटी- राड़ीटाप- धरासू
30.	खाई घाटी- खाइमंडल, उत्तरकाशी
31.	गौरा घाटी- चकराता, जौनसार
32.	भैरो घाटी- गंगोत्री, उत्तरकाशी
33.	सोर / शौर / घाटी- पिथौरागढ़
34.	कत्यूर घाटी- गरुड़ - बैजनाथ
35.	बारारौ घाटी- सोमेश्वर-अल्मोड़ा
36.	गिवाड़ घाटी- चौखुटिया- अल्मोड़ा

2 CHAPTER उत्तराखण्ड का जिला दर्शन

- उत्तरांचल विधेयक लोकसभा में 1 अगस्त, 2000 ई. को पारित हुआ। **वन दरोगा -20/FRO/ARO-15**
- उत्तराखंड का गठन 9 नवंबर 2000 को भारत के 27वें राज्य के रूप में हुआ था, जब इसे उत्तरी उत्तर प्रदेश से अलग किया गया था। **Abkai Shipahi -21**

- उत्तराखण्ड निर्माण हेतु कौशिक समिति का गठन 4 जनवरी, 1994 को किया गया। **DEO-16**
- कौशिक समिति के अध्यक्ष रमाशंकर कौशिक थे।
- इस समिति ने उत्तराखण्ड राज्य मे 8 जनपदों व 3 मंडलों के स्थापना की सिफारिश की थी।

- हिमालय पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित यह एक पहाड़ी राज्य है, जिसकी उत्तर में चीन (तिब्बत) और पूर्व में नेपाल के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ हैं।
- इसके उत्तर-पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश स्थित है
- राज्य चूना पत्थर, संगमरमर, रॉक फॉस्फेट, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, तांबा, जिप्सम आदि खनिज भंडारों से समृद्ध है।
- लघु उद्योगों की संख्या 25,294 है जो 63,599 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करते हैं।
- अधिकांश उद्योग वन-आधारित हैं।

सामान्य सूचनायें

(क) मौसम सम्बन्धी आंकड़े				
1.	वर्षा (I) सामान्य (ii) वास्तविक	 2022 2022	 मि. मि./m.ms मि. मि./m.ms	 1491 1630
2.	तापमान (I) न्यूनतम (मुक्तेश्वर) (ii) उच्चतम (पन्तनगर)	 2022 2022	 'से. / °C 'से. / °C	 – 4.3 39.9
(ख) प्रशासनिक इकाईयाँ				
1.	मण्डल	2023	2	गढ़वाल, कुमाऊँ
2.	जनपद	2023	13	1. चामोली 2. देहरादून 3. हरिद्वार 4. पौड़ी गढ़वाल 5. रूद्र प्रयाग 6. टेहरी 7. गढ़वाल 8. उत्तरकाशी 9. अलमोड़ा 10. बागेश्वर 11. चम्पावत 12. नैनीताल 13. पित्तोरागढ़ 14. उधमसिंह नगर
3.	(i) तहसील **VDO-16/Jail Bandi Rakshak -13** (ii) उप तहसील	2023 2023	100 18	
4.	सामुदायिक विकास खण्ड	2023	95	
5.	न्याय पंचायत	2023	662	
6.	ग्राम पंचायत	2023	77957	
7.	जनगणना ग्राम (जनगणना 2011 के अनुसार) आबाद ग्राम (वन बस्तियों को सम्मिलित करते हुए) गैर आबाद ग्राम	2011 2011 2011	16793 19746 1048	

8.	नगर / नगर समूह			
	(i) नगर निगम	2023	संख्या / No.	09
	Karmik Sahayak (Chitra Lekhan)-14			
	(ii) नगर पालिका परिषद	2023	संख्या / No.	42
	(iii) नगर पंचायत	2023	संख्या / No.	52
	(iv) छावनी क्षेत्र	2023	संख्या / No.	09
	(v) जनगणना शहर	2023	संख्या / No.	41
	(vi) औद्योगिक कस्बे	2023	संख्या / No.	02

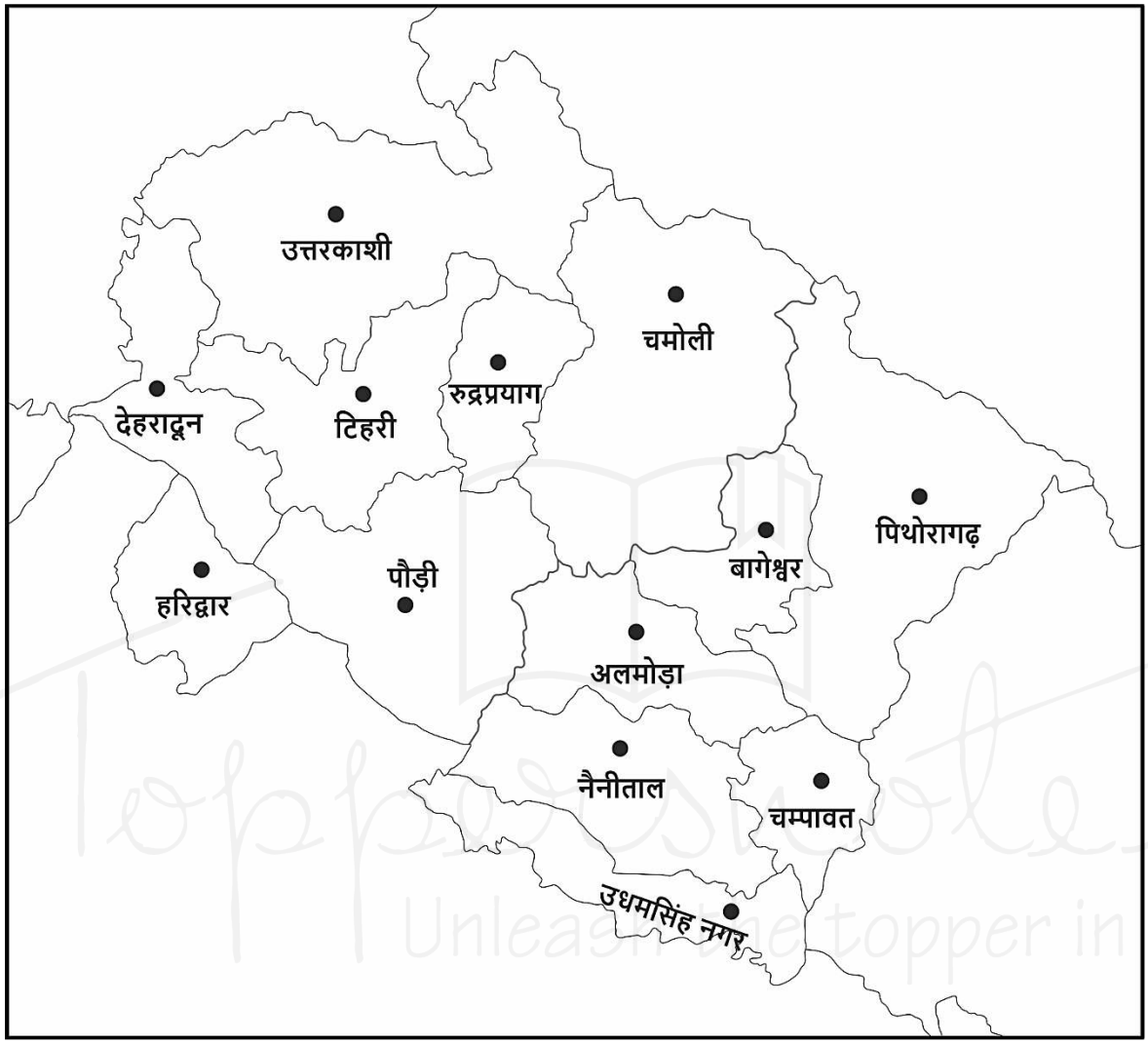

गठन	9 नवम्बर, 2000 (27वें राज्य के रूप में)
शासकीय नाम	उत्तराखण्ड (1 जनवरी 2007 से) **Amin Postel-27/PA16/PRV-15**
राजधानी	देहरादून (अस्थायी)
राज्य का आकार	लगभग आयताकार
भौगोलिक स्थिति	28°43' उत्तरी अक्षांश से 31°27' उत्तरी अक्षांश तथा 77°34' पूर्वीदिशान्तर से 81°02' पूर्वी देशान्तर तक उत्तराखंड राज्य का आकार लगभग आयताकार हैं पूर्व से पश्रिम तक राज्य

	की लम्बाई लगभग 358 किमी. तथा उत्तरदक्षिण तक चौड़ाई लगभग 320 किमी है। **Meat Inspector-16**
भौगोलिक क्षेत्रफल	53483 वर्ग किमी **UDA/LDA-06/Group C-15**
भौगोलिक सीमाएँ	उत्तर में हिमालय पार तिब्बत (चीन), पूर्व में नेपाल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश का तराई क्षेत्र, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश।
सीमावर्ती राज्य	हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश
देश का राज्य	27 वॉ
राजकीय भाषा **JA/CO-17**	प्रथम हिन्दी, द्वितीय संस्कृत 2010 से

Toppersnotes Unleash the topper in you

क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में स्थान	19 वाँ राज्य (तेलगाना बनने के बाद इसका स्थान 18 से 19वाँ हो गया
राजकीय वाद्य यन्त्र	ढोल (2015) से
राज्यगीत	उत्तराखण्ड देवभूमि, मातृभूमि (रचना- हेमन्द बिष्ट) (2016) में
राज्य खेल	फुटबाल (2011)
राज्य तितली	कॉमन पीकॉक (2016) (महाराष्ट्र के बाद कामन पीकॉक को राज्य तितली बनाने वाला दूसरा राज्य)
राज्य मिठाई	बालमिठाई
उच्च न्यायालय	नैनीताल (देश का 20 वां उच्च न्यायालय)
राजकीय पशु **वन दरोगा -2020**	कस्तूरी मृग (मास्कस क्राइसोगास्टर)
राजकीय पक्षी **Sachivalay Prashasan - 2015**	मोनाल (लोफोफोरस इंपीजेनस)
राजकीय वृक्ष	बुराँस (रोडोडेन्ड्रान आरवोरियम)
राजकीय पुष्प **UK Police-16**	ब्रह्म कमल (सोसूरिया अबवेलेटा)
राष्ट्रीय उद्यान	6 (जिम कार्बेट, नन्दा देवी, फूलों की घाटी, राजाजी, गंगोत्री, गोविन्द)
वन्यजीव अभयारण्य/विहार	7 (गोविन्द, केदारनाथ, अस्कोट, सोन नदी, बिनसर, विनोग, नंधौर)
संरक्षित क्षेत्र	03 (आसन, झिलमिल, पवलगढ़)
राज्य में सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान	नरेन्द्र नगर (318 सेमी.)
राज्य की सबसे ऊँची चोटी	नन्दादेवी (7,817 मी.)
प्रमुख पर्यटन स्थल	बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, हेमकुंड, नैनीताल, मसूरी, रानीखेत, हरिद्वार, ऋषिकेश, कौसानी
प्रमुख जनजातियाँ	भोटिया, बोक्सा, जौनसारी, राजी, थारू, झाड़
प्रमुख नदियाँ	गंगा, यमुना, टोंस, काली तथा रामगंगा
मुख्य वन प्रकार	हिमाद्रि, उपहिमाद्रि, आर्द्र, सम-शीतोष्ण वन
आय का प्रमुख स्रोत	पर्यटन, वन संपदा, खनिज संपदा तथा जल विद्युत परियोजनाएँ

उतराखण्ड के प्रतीक चिन्ह में पर्वतों की संख्या तीन है। गोलाकार मुहर में तीन पर्वतों की श्रृंखला में ऊपर अशोक की लाट तथा नीचे गंगा की लहरों को दर्शाया हैं।

HC Steno-2015

क्षेत्रफल के अनुसार जिलो का क्रम-

नाम	क्षेत्रफल	गठन
1. चमोली	8030 वर्ग किमी	1960 (सबसे बड़ा जिला)
2. उत्तरकाशी	8016 वर्ग किमी	1960
3. पिथौरागढ़	7090 वर्ग किमी	1960
4. पोड़ी	5329 वर्ग किमी	1840
5. टिहरी	3642 वर्ग किमी	1949
6. नैनीताल	4251 वर्ग किमी	1891
7. देहरादून	3088 वर्ग किमी	1817
8. अल्मोड़ा	3139 वर्ग किमी	1891
9. ऊधम सिंह नगर	2542 वर्ग किमी	1995
10. हरिद्वार	2360 वर्ग किमी	1988
11. बागेश्वर	2246 वर्ग किमी	1997
12. रुद्रप्रयाग	1984 वर्ग किमी	1997
13. चम्पावत	1766 वर्ग किमी	1997 (सबसे छोटा जिला)

उत्तराखण्ड का भूगोल

उत्तराखंड का अक्षांशीय व देशांतरीय विस्तार –

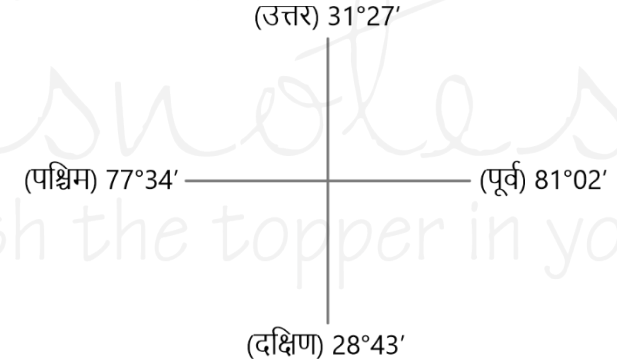

उत्तराखण्ड की राजनैतिक व प्राकृतिक सीमा

राजनैतिक सीमा

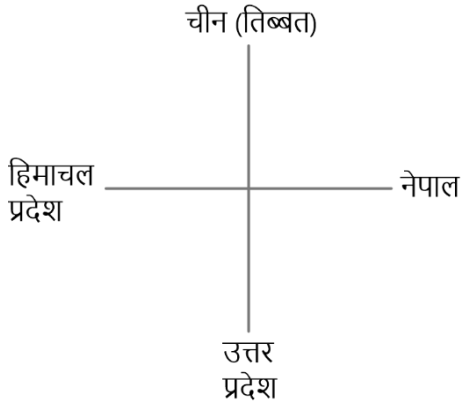

प्राकृतिक सीमा

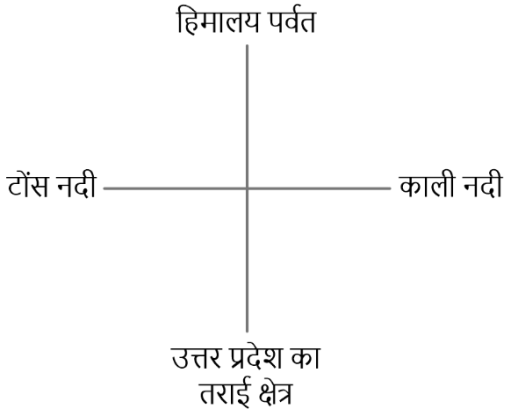

गठन की तिथि	09, नवंबर 2000
अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ	चीन (तिब्बत), नेपाल
राज्य की सीमाएँ	हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश
चार-धाम	बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री
राज्य पशु	हिमालयी कस्तूरी मृग
राज्य पुष्प	ब्रह्म कमल
राज्य वृक्ष	बुरांस
राज्य पक्षी	हिमालयन मोनाल
भाषा	घरवाली, कुमाऊँनी, हिंदी
राजभाषा	हिंदी (प्राथमिक), संस्कृत (माध्यमिक)
जिलों की संख्या	१३
खनिज पदार्थ	चूना पत्थर, संगमरमर, रॉक फॉस्फेट, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, तांबा, जिप्सम
फसलें	चावल, गेहूँ, अरहर, ज्वार, तिलहन
नदियाँ	गंगा, यमुना, काली, रामगंगा, टोन
झरने	कॉर्बेट, झड़ीपानी, वसुधारा, केम्पटी, सहस्त्रधारा, बिर्थी, टाइगर फॉल
समारोह	नंदा देवी मेला, देवीधुरा मेला, पूरनगिरी मेला
नृत्य संगीत	गढ़वाली लोक नृत्य और संगीत
कला शिल्प	खोली लकड़ी की नक्काशी, ऐपण, रंगोली
पर्यटक स्थल	नैनीताल, नंदा देवी पार्क, अल्मोड़ा फूलों की घाटी
राष्ट्रीय उद्यान	कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान, गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान, नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान, राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, गोविंद राष्ट्रीय उद्यान
वन्यजीव अभ्यारण्य	गोविंद वन्यजीव अभयारण्य, केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य
पहाड़	नंदा देवी, पंचचूली, त्रिशूल, भागीरथी, नीलकंठ, गौमुख, चौखम्बा
जनजाति	राजी, थारू, बुस्का, जौनसारी, भोटिया

संस्थान

- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान
- केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
- वन अनुसंधान संस्थान
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी
- भारतीय पेट्रोलियम अनुसंधान संस्थान
- भारतीय सैन्य अकादमी
- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
- लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
- राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
- राष्ट्रीय शीतजल मत्स्य पालन अनुसंधान केंद्र
- विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
- भारतीय वन्यजीव संस्थान

उत्तराखण्ड में सीटों का आवंटन-

FRO-16/Police-16/ARO-19/HC-15

- राज्यसभा की सीटे- 03 **Amin Postel-17**
- लोकसभा की सीटे- 05
- विधानसभा की सीटे- 70 (SC-13 सीटें /ST -2)

HC Steno-15/UK Police-16/mukhya sevvika-15

- मण्डल की संख्या - 02

गढ़वाल मंडल के जिले

उत्तरकाशी जिला

- उत्तरकाशी जिला 24 फरवरी 19 60 को बनाया गया था, इसके बाद से तत्कालीन टिहरी गढ़वाल जिले के रवाई तहसील के रवाई और उत्तरकाशी के परगनाओं का गठन किया गया था।
- उत्तरांचल के उत्तरकाशी से तिब्बत-नेपाल के साथ व्यापार किया जाता है। **UK PCS-2004-05**
- यह राज्य के चरम उत्तर-पश्चिम कोने में 8016 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है रहस्यमय हिमालय के बीहड़ इलाके में इसके उत्तर में हिमाचल प्रदेश राज्य और तिब्बत का क्षेत्र और पूर्व में चमोली जिले का स्थान है।
- उत्तराखंड का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला है

ARO-16/UK PCS-2006-07

- जिले का मुख्यालय उत्तरकाशी एक प्राचीन स्थान है, जिसका मतलब समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है और जैसा कि नाम से पता चलता है कि उत्तर (उत्तरा) का काशी लगभग समान है, जैसा कि वाराणसी का काशी है।
- वाराणसी और उत्तर का काशी दोनों गंगा (भागीरथी) नदी के तट पर स्थित हैं।
- जो क्षेत्र पवित्र और उत्तरकाशी के रूप में जाना जाता है, उसके क्षेत्र श्यालम गाड को भी वरुण और कलिगढ़ के नाम से जाना जाता है, जो कि असी के नाम से भी जाना जाता है।
- नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड) में स्थित है। **UK ACF-2021**
- नेहरु पर्वतारोहण संस्थान (NIM) को भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्वतारोहण संस्थानों में से एक के रूप में दर्ज किया गया है और इसे एशिया का सबसे प्रतिष्ठित पर्वतारोहण संस्थान भी माना जाता है।
- 'उत्तरकाशी' का प्राचीन नाम बाराहाट था **RO/ARO-16**
- वरुण और अस्सी नदियों के नाम हैं, जिसके बीच सागर का काशी निहित है। उत्तरकाशी में सबसे पवित्र घाटों में से एक मणिकर्णिका जो वाराणसी में उसके नाम से है। दोनों विश्वनाथ मंदिर को समर्पित हैं।

चमोली जिला

- चमोली जिले द्वारा कवर किया जाने वाला क्षेत्र कुमाऊं के पौड़ी गढ़वाल जिले का 1960 तक हिस्सा था ।
- यह गढ़वाल मार्ग के पूर्वोत्तर के किनारे पर स्थित है और मध्य या मध्य-हिमालय में प्राचीन हिमालय पर्वत के तीन हिस्सों में से एक बहिरगिरि के रूप में प्राचीन पुस्तकों में वर्णित हिमाच्छन्न इलाके में स्थित है।
- चामोली, "गढ़वाल" का जिला, किलों की भूमि है। आज के गढ़वाल को अतीत में केदार-खण्ड के नाम से जाना जाता था। पुराणों में केदार-खण्ड को भगवान का निवास कहा जाता था।
- यह माना जाता है कि भगवान गणेश ने व्यास गुफा में वेदों की पहली लिपि लिखी, जो की बद्रीनाथ से केवल चार किलोमीटर दूर अंतिम गांव माना में स्थित है।
- ऋग्वेद के अनुसार (1017-19) जलप्लावन (जलप्रलय) के बाद सप्त-ऋषियों ने एक ही गांव माना में अपनी जान बचाई।
- इसके अलावा वैदिक साहित्य की जड़ें गढ़वाल से उत्पन्न होती हैं क्योंकि गढ़वाली भाषा में संस्कृत के बहुत सारे शब्द हैं।
- वैदिक ऋषियों की कर्मस्थली गढ़वाल के प्रमुख तीर्थ स्थान है, जो विशेष रूप से चमोली में स्थित हैं, जैसे अनसूया में अत्रमुनी आश्रम चमोली शहर से लगभग 25 किमी दूर है, बद्रीनाथ के पास गांधीमदन पर्वत में कश्यप ऋषि का कर्मस्थली ।
- आदि-पुराण के अनुसार, बद्रीनाथ के पास व्यास गुफा में वेदव्यास द्वारा महाभारत की कहानी लिखी गई थी।
- पांडुकेश्वर एक छोटा गांव है जो ऋषिकेश बद्रीनाथ राजमार्ग में स्थित है जहां से बद्रीनाथ 25 किमी दूर है, इसे राजा पांडु की तपस्थली कहा जाता है। केदार-खण्ड पुराण में इस देश को भगवान शिव की भूमि माना जाता है।
- कुछ इतिहासकार और वैज्ञानिक मानते हैं कि गढ़वाल की भूमि आर्य वंश की उत्पत्ति है। ऐसा माना जाता है कि लगभग 300 बी.सी. खासा ने कश्मीर नेपाल और कुमन के माध्यम से गढ़वाल पर हमला किया।
- चाँदपुरगढ़ का राज्य चमोली जनपद में था। यही भानुप्रताप पाल की राजधानी थी। इसके बाद यहीं पंवार राजवंश के संस्थापक कनकपाल ने अपनी राजधानी बनाई।

UKPCS-2004

- इस आक्रमण के कारण एक संघर्ष बढ़ गया, इन बाहरी लोगों और मूल के बीच एक संघर्ष हुआ। उनके संरक्षण के लिए मूलभूत रूप से "गढ़ी" नामक छोटे किले बनाए गए बाद में, ख़ास ने पूरी तरह से देश को हराया और किलों पर कब्जा कर लिया।
- क्षत्रिय में से एक कंटूरा वासुदेव ने गढ़वाल की उत्तरी सीमा पर अपना शासन स्थापित किया और जोशीमठ में अपनी राजधानी की स्थापना की, तब कार्तिकेय वासुदेव गढ़वाल में कटुरा राजवंश के संस्थापक थे और उन्होंने सैकड़ों वर्षों से कत्तयी शासनकाल में गढ़वाल का शासन किया था।
- शंकराचार्य ने गढ़वाल का दौरा किया और ज्योतिर्मठ स्थापित किया जो कि चार प्रसिद्ध पीठों में से एक है। भारत में अन्य पीठों में द्वारिका, पुरी और श्रृंगेरी हैं।
- उन्होंने बद्रीनाथ में भगवान बद्रीनाथ की मूर्ति फिर से स्थापित की, इससे पहले बद्रीनाथ की मूर्ति बुद्धों के भय से नारद-कुंड में छिपी हुई थी। वैदिक पंथ के इस नैतिकता के बाद बद्रीनाथ तीर्थयात्री के लिए शुरू हुआ।
- 8 सितंबर 1803 के विनाशकारी भूकंप ने गढ़वाल राज्य की आर्थिक और प्रशासनिक स्थापना को कमजोर कर दिया।

29 मार्च, 1999 को चमोली में आये भूकम्प की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 6.8 थी। 20 अक्टूबर, 1991 को उत्तरकाशी में आये भूकम्प की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 6.6 थी।

UKPCS-2004-05

- स्थिति का फायदा उठाते हुए अमर सिंह थापा और हल्दीलाल चंटुरिया के आदेश के तहत गोरखाओं ने गढ़वाल पर हमला किया। उन्होंने वहां स्थापित गढ़वाल के आधे से अधिक हिस्से को 1804 से 1815 तक गोरखा शासन के अधीन रखा ।
- पंवार राजवंश के राजा सुदर्शन शाह ने ईस्ट इंडिया कंपनी से संपर्क किया और मदद मांगी । अंग्रेजों की सहायता से उन्होंने गोरकस को हटा दिया और अलकनंदा और मंदाकानी के पूर्वी भाग को ब्रिटिश गढ़वाल में राजधानी श्रीनगर के साथ विलय कर दिया, उस समय से यह क्षेत्र ब्रिटिश गढ़वाल के रूप में जाना जाता था और गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर की बजाय टिहरी में स्थापित की गई थी।
- शुरुआत में ब्रिटिश शासक ने देहरादून और सहारनपुर के नीचे इस क्षेत्र को रखा था। लेकिन बाद में अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में एक नया जिला स्थापित किया और इसका नाम पौड़ी रखा।
- आज की चमोली एक तहसील थी। 24 फरवरी, 1960 को तहसील चमोली को एक नया जिला बनाया गया।
- अक्टूबर 1997 में जिला चमोली के दो पूर्ण तहसील और दो अन्य ब्लॉक (आंशिक रूप से) का नए गठित जिले रुद्रप्रयाग में विलय कर दिया गया।

- चमोली जिले के गैरसेण को उत्तराखण्ड की ग्रीष्म कालीन राजधानी है। **FRO-16**

रुद्रप्रयाग जिला

- रुद्रप्रयाग जिला 16 सितंबर 1997 को स्थापित किया गया था। यह अलकनन्दा और मंदाकिनी दो नदियों के संगम पर स्थित है।
- रुद्रप्रयाग, पंच प्रयागों में से एक है और अलकनंदा नदी के पांच संगम में से एक हैं। रुद्रप्रयाग को प्राकृतिक सौन्दर्य उपहार स्वरुप प्राप्त हुआ है जो जलवायु क्षेत्र की ऊंचाई पर निर्भर करता है।
- जिले को तीन निकटवर्ती जिलों के निम्नलिखित क्षेत्रों से बनाया गया था।
    - अगस्तमुनी और उखीमठ ब्लॉक को पूर्ण रूप से एवं पोखरी एवं कर्णप्रयाग ब्लॉक का कुछ हिस्सा चमोली जिले से लिया गया है।
    - जखोली और किर्तीनगर ब्लॉक का हिस्सा टिहरी।
    - खिरसू ब्लॉक का हिस्सा पौडी जिले से लिया गया है।
- अक्षांश: 30° उत्तर
- देशांतर : 78° पूर्व
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज्ञात श्री केदारनाथ मंदिर उत्तर में स्थित है, पूर्व में मदमहेश्वर, दक्षिणी पूर्व में नगरासू और ठीक दक्षिण में श्रीनगर हैं। केदारनाथ से उत्पन्न पवित्र मंदाकिनी नदी जिले की मुख्य नदी है।
- केदारनाथ मंदिर एक हिंदू मंदिर है जो पांडवों द्वारा निर्मित किया गया और आदि शंकराचार्य द्वारा पुनर्जीवित किया गया है।
- यह बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक, शिव के सबसे पवित्र हिंदू तीर्थस्थानों में से एक है। माना जाता है कि पांडवों ने केदारनाथ में तपस्या करके शिव को प्रसन्न किया था।
- केदारनाथ मंदिर, मंदाकिनी नदी के निकट गढ़वाल हिमालय पर्वत पर है। विषम मौसम एवं बर्फबारी के कारण, मंदिर केवल अप्रैल के अंत (अक्षय त्रित्रिया) से नवम्बर (कार्तिक पूर्णिमा – शरद ऋतु पूर्णिमा) तक खुला रहता है।
- सर्दियों के दौरान, केदारनाथ मंदिर से विग्रहों (देवताओं) को उखीमठ में लाया जाता है और इस दौरान यंहा पर पूजा की जाती है

टिहरी गढ़वाल जिला

- टिहरी गढ़वाल उत्तराखंड राज्य के बाहरी हिमालयी दक्षिणी ढलान पर पड़ने वाला एक पवित्र पहाड़ी जिला है । कहा जाता है की इस ब्रह्माण्ड की रचना से पूर्व भगवान ब्रह्मा ने इस पवित्र भूमि पर तपस्या की थी ।
- इस जिले में पड़ने वाले दो स्थान मुनि की रेती एवं तपोवन प्राचीन काल में ऋषियों की तपस्थली थी । यहाँ के पर्वतीय इलाके एवं संचार के साधनों की कमी के कारण यहाँ संस्कृति अभी तक संरक्षित है।
- टिहरी गढ़वाल का नाम दो शब्द टिहरी एवं गढ़वाल से मिल कर बना है, जिस में उपसर्ग टिहरी वास्तव में त्रिहरी का अपभ्रंश है जो की उस स्थान का प्रतीक है जो तीन प्रकार के पापों को धोने वाला है ये तीन पाप क्रमश 1. विचारों से उत्पन्न पाप (मनसा) 2. शब्दों से उत्पन्न पाप (वचसा) 3. कर्मों से उत्पन्न पाप (कर्मणा) ।
- इसी प्रकार दूसरे भाग गढ़ का अर्थ है देश का किला । वास्तव में पुराने दिनों में किलों की संख्या के कब्जे को उनके शासक की समृधि और शक्ति का प्रतीक माना जाता था ।
- 888 से पहले पूरा गढ़वाल क्षेत्र अलग अलग स्वतंत्र राजाओं द्वारा शासित छोटे छोटे गढ़ों में विभाजित था । जिनके शासकों को राणा, राय और ठाकुर कहा जाता था ।
- ऐसा कहा जाता है की राज कुमार कनक पाल जो मालवा से श्री बदरीनाथ जी के दर्शन को आये जो की वर्तमान मे चमोली जिले में है वहां उनकी भेंट तत्कालीन राजा भानुप्रताप से हुयी।
- राजा भानुप्रताप ने राज कुमार कनक पाल से प्रभावित होकर अपनी एक मात्र पुत्री का विवाह उनके साथ तय कर दिया और अपना सारा राज्य उन्हें सौंप दिया ।
- धीरे धीरे कनक पाल एवं उनके वंशजों ने सारे गढ़ों पर विजय प्राप्त कर साम्राज्य का विस्तार किया। इस प्रकार 1803 तक अर्थात 915 सालों तक समस्त गढ़वाल क्षेत्र इनके आधीन रहा।

- 1794-95 के दौरान गढ़वाल क्षेत्र गंभीर अकाल से ग्रस्त रहा तथा पुनः 1883 में यह क्षेत्र भयानक भूकंप से त्रस्त रहा तब तक गोरखाओं ने इस क्षेत्र पर आक्रमण करना शुरू कर दिया था और इस क्षेत्र पर उनके प्रभाव की शुरुआत हुयी।
- इस क्षेत्र के लोग पहले ही प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त होकर दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में थे और इस कारणवश वो गोरखाओं के आक्रमण का विरोध नहीं कर सके वहीं दूसरी तरफ गोरखा जिनके लंगूरगढ़ी पर कब्ज़ा करने के लाखों प्रयत्न विफल हो चुके थे, अब शक्तिशाली स्थिति में थे ।
- सन 1803 में उन्होंने पुनः गढ़वाल क्षेत्र पर महाराजा प्रद्युम्न शाह के शासन काल में आक्रमण किया । महाराजा प्रद्युम्न शाह देहरादून में गोरखाओं से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए परन्तु उनके एक मात्र नाबालिग पुत्र सुदर्शन शाह को उनके विश्वास पात्र राजदरबारियों ने चालाकी से बचा लिया।
- इस लड़ाई के पश्चात गोरखाओं की विजय के साथ ही उनका अधिराज्य गढ़वाल क्षेत्र में स्थापित हुआ ।
- इसके पश्चात उनका राज्य कांगड़ा तक फैला और उन्होंने यहाँ 12 वर्षों तक राज्य किया जब तक कि उन्हें महाराजा रणजीत के द्वारा कांगड़ा से बाहर नहीं निकाल दिया गया ।
- वहीँ दूसरी ओर सुदर्शन शाह ईस्ट इंडिया कम्पनी से मदद का प्रबंध करने लगे ताकि गोरखाओं से अपने राज्य को मुक्त करा सके।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी ने कुमाउं देहरादून एवं पूर्वी गढ़वाल का एक साथ ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया तथा पश्चिमी गढ़वाल को राजा सुदर्शन शाह को सौंप दिया जो की टिहरी रियासत के नाम से जाना गया।
- महाराजा सुदर्शन शाह ने अपनी राजधानी टिहरी नगर में स्थापित की तथा इसके पश्चात उनके उत्तराधिकारियों प्रताप शाह, कीर्ति शाह तथा नरेंद्र शाह ने अपनी राजधानी क्रमशः प्रताप नगर, कीर्ति नगर एवं नरेन्द्र नगर में स्थापित की । इनके वंशजों ने इस क्षेत्र में 1815 से 1949 तक शासन किया।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के समय इस क्षेत्र के लोगों ने सक्रीय रूप से भारत की आजादी के लिए बढ़ चढ़ कर भाग लिया और अंत में जब देश को 1947 में आजादी मिली टिहरी रियासत के निवासियों ने स्वतंत्र भारत में विलय के लिए आन्दोलन किया।
- इस आन्दोलन के कारण परिस्थितियां महाराजा के वश में नहीं रही और उनके लिए शासन करना कठिन हो गया जिसके फलस्वरूप पंवार वंश के शासक महाराजा मानवेन्द्र शाह ने भारत सरकार की सम्प्रभुता स्वीकार कर ली ।
- इस प्रकार सन 1949 में टिहरी रियासत का उत्तर प्रदेश में विलय हो गया । इसके पश्चात टिहरी को एक नए जनपद का दर्जा दिया गया।
- एक बिखरा हुआ क्षेत्र होने के कारण इसके विकास में समस्याएँ थी परिणामस्वरुप 24 फ़रवरी 1960 को उत्तर प्रदेश ने टिहरी की एक तहसील को अलग कर एक नए जिले उत्तरकाशी का नाम दिया।

पौड़ी गढ़वाल जिला

- सदियों से गढ़वाल हिमालय में मानव सभ्यता का विकास शेष भारतीय उप-महाद्वीपों के समानांतर रहा है।
- कत्युरी पहला ऐतिहासिक राजवंश था, जिसने एकीकृत उत्तराखंड पर शासन किया और शिलालेख और मंदिरों के रूप में कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख छोड़ दिए |
- कत्युरी के पतन के बाद की अवधि में, यह माना जाता है कि गढ़वाल क्षेत्र 64 (चौसठ) से अधिक रियासतों में विखंडित हो गया था और मुख्य रियासतों में से एक चंद्रपुरगढ़ थी , जिस पर कनकपाल के वंशजों ने शासन किया।
- 15वीं शताब्दी के मध्य में चंद्रपुररगढ़ जगतपाल (1455 से 1493 ई.), जो कनकपाल के वंशज थे, के शासन के तहत एक शक्तिशाली रियासत के रूप में उभरा।
- 15वीं शताब्दी के अंत में अजयपाल ने चंदपुरगढ़ पर शासन किया और कई रियासतों को उनके सरदारों के साथ एकजुट करके एक ही राज्य में समायोजित कर लिया और इस राज्य को गढ़वाल के नाम से जाना जाने लगा।
- इसके बाद उन्होंने 1506 से पहले अपनी राजधानी चांदपुर से देवलगढ़ और बाद में 1506 से 1519 ई. के दौरान श्रीनगर स्थानांतरित कर दी थी।
- राजा अजयपाल और उनके उत्तराधिकारियों ने लगभग तीन सौ साल तक गढ़वाल पर शासन किया था, इस अवधि के दौरान उन्होंने कुमाऊं, मुगल, सिख, रोहिल्ला के कई हमलों का सामना किया था।
- गढ़वाल के इतिहास में गोरखा आक्रमण एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह अत्यधिक क्रूरता के रूप में चिह्नित थी और 'गोरखायनी' शब्द नरसंहार और लूटमार सेनाओं का पर्याय बन गया था।
- प्राचीन साहित्य में कुमार्ऊ क्षेत्र को 'मानसखंड के नाम से जाना जाता है।

- कुमाऊँ शब्द की उत्पति कूर्मांचल से हुई है जिसका अर्थ 'कूर्म का देश' होता है।
- कुमाऊँ के उत्तर में तिब्बत और दक्षिण में उत्तर प्रदेश हैं
- इसके पूर्व में नेपाल और पश्चिम में गढ़वाल क्षेत्र स्थित हैं।
- दती और कुमाऊं के अधीन होने के बाद, गोरखा ने गढ़वाल पर हमला किया और गढ़वाली सेनाओ द्वारा कठोर प्रतिरोधों के बावजूद लंगूरगढ़ तक पहुंच गए। लेकिन इस बीच, चीनी आक्रमण की खबर आ गयी और गोरखाओं को घेराबंदी करने के लिए मजबूर किया गया।
- हालांकि 1803 में उन्होंने फिर से एक आक्रमण किया। कुमाऊं को अपने अधीन करने के बाद गढ़वाल में त्रिय(तीन) स्तम्भ आक्रमण किया हैं।
- पांच हज़ार गढ़वाली सैनिक उनके इस आक्रमण के रोष के सामने टिक नही सके और राजा प्रदीमन शाह अपना बचाव करने के लिए देहरादून भाग गए। लेकिन उनकी सेनाओं की गोरखा सेनाओ के साथ कोई तुलना नही हो सकती थी ।
- गढ़वाली सैनिक भारी मात्रा में मारे गए और खुद राजा खुडबुडा की लड़ाई में मारे गए ।
- 1804 में गोरखा पूरे गढ़वाल के स्वामी बन गए और बारह साल तक क्षेत्र पर शासन किया।
- सन 1815 में गोरखों का शासन गढ़वाल क्षेत्र से समाप्त हुआ, जब अंग्रेजों ने गोरखाओं को उनके कड़े विरोध के बावजूद पश्चिम में काली नदी तक सीमित कर दिया था। गोरखा सेना की हार के बाद, 21 अप्रैल 1815 को अंग्रेजों ने गढ़वाल क्षेत्र के पूर्वी, गढ़वाल का आधा हिस्सा, जो कि अलकनंदा और मंदाकिनी नदी के पूर्व में स्थित है, जोकि बाद में, 'ब्रिटिश गढ़वाल' और देहरादून के दून के रूप में जाना जाता है, पर अपना शासन स्थापित करने का निर्णय लिया।
- पश्चिम में गढ़वाल के शेष भाग जो राजा सुदर्शन शाह के पास था, उन्होंने टिहरी में अपनी राजधानी स्थापित की ।
- प्रारंभ में कुमाऊं और गढ़वाल के आयुक्त का मुख्यालय नैनीताल में ही था लेकिन बाद में गढ़वाल अलग हो गया और 1840 में सहायक आयुक्त के अंतर्गत पौड़ी जिले के रूप में स्थापित हुआ और उसका मुख्यालय पौड़ी में गठित किया गया।
- आजादी के समय, गढ़वाल, अल्मोड़ा और नैनीताल जिलों को कुमाऊं डिवीजन के आयुक्त द्वारा प्रशासित किया जाता था।
- 1960 के शुरुआती दिनों में, गढ़वाल जिले से चमोली जिले का गठन किया गया । 1969 में गढ़वाल मण्डल पौड़ी मुख्यालय के साथ गठित किया गया ।
- 1998 में रुद्रप्रयाग के नए जिले के निर्माण के लिए जिला पौड़ी गढ़वाल के खिर्सू विकास खंड के 72 गांवों के लेने के बाद जिला पौड़ी गढ़वाल आज अपने वर्तमान रूप में पहुंच गया है।

हरिद्वार जिला

- प्रकृति प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग, हरिद्वार भारतीय संस्कृति और सभ्यता की बहुरूपदर्शिका प्रस्तुत करता है।
- हरिद्वार को 'ईश्वर का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है जिसे मायापुरी, कपिला, गंगाधर के रूप में भी जाना जाता है।

HC Steno-15

- भगवान शिव के अनुयायी और भगवान विष्णु के अनुयायी इसे क्रमशः हरद्वार और हरिद्वार नाम से उच्चारण करते हैं|
- यह देवभूमि चार धाम अर्थात बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के प्रवेश के लिए एक केन्द्र बिंदु है|
- कहा जाता है कि महान राजा भगीरथ गंगा नदी को अपने पूर्वजों को मुक्ति प्रदान करने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी तक लाये है।
- यह भी मान्यता है कि हरिद्वार को तीन देवताओं ने अपनी उपस्थिति से पवित्र किया है ब्रह्मा, विष्णु और महेश | कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने हर की पैड़ी के ऊपरी दीवार में पत्थर पर अपना पैर प्रिंट किया है, जहां पवित्र गंगा हर समय उसे छूती है।
- हरिद्वार चार स्थानों में से एक है; जहां हर छह साल बाद अर्ध कुंभ और हर बारह वर्ष बाद कुंभ मेला होता है।
- ऐसा कहा जाता है कि अमृत की बुँदे हर की पैड़ी के ब्रह्मकुंड में गिरती हैं इसलिए माना जाता है कि इस विशेष दिन में ब्रह्मकुंड में किया स्नान बहुत शुभ है |
- प्राचीनतम जीवित शहरों में से एक होने के नाते, हरिद्वार प्राचीन हिंदू शास्त्रों में भी अपना उल्लेख पाता है जिसका समय बुद्ध से लेकर हाल ही के ब्रिटिश आगमन तक फैलता है।
- हरिद्वार कला, विज्ञान और संस्कृति को सीखने के लिए विश्व के आकर्षण का केन्द्र भी बनता हैं। हरिद्वार की आयुर्वेदिक दवाओं और हर्बल उपचारों के साथ ही अपनी अनूठी गुरुकुल विद्यालय, प्राकृतिक सुंदरता और हरियाली के लिए भी एक आकर्षण का केन्द्र है ।

- गंगा नदी की पहाड़ो से मैदान तक की यात्रा में हरिद्वार पहले प्रमुख शहरों में से एक है और यही कारण है कि यहां पानी साफ और शांत है।
- हरे भरे जंगल और छोटे तालाब इस पवित्र भूमि को प्राकृतिक सुंदरता से जोड़ते हैं। राजाजी राष्ट्रीय उद्यान हरिद्वार से सिर्फ 10 किमी दूर है।
- जंगली जीवन और रोमांच प्रेमियों के लिए यह एक आदर्श स्थल है। प्रतिदिन सांय हरिद्वार के सभी प्रमुख घाट गंगा नदी की आरती की पवित्र ध्वनि एवं दीपकों के दिव्य प्रकाश से प्रदीप्त होते हैं।
- आज हरिद्वार का केवल धार्मिक महत्व ही नहीं है बल्कि यह एक आधुनिक सभ्यता का मंदिर भी है।
- भेल एक नवरत्न पीएसयू जिसके तहत हरिद्वार में स्थापित इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल एस्टेट(आईआईई) में अनेक उद्योग स्थापित हैं। साथ ही इससे पहले रूड़की विश्वविद्यालय विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विश्व स्तर का पुराना और प्रतिष्ठित संस्थान है।
- जिले का एक अन्य प्रमुख विश्वविद्यालय अर्थात गुरूकुल अपने विशाल परिसर के साथ पारंपरिक एवं आधुनिक शिक्षा दे रहे हैं।
- उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले में सर्वाधिक विधानसभा सीटों की संख्या (11) है। **JATC-21**

देहरादून जिला

- स्कंद पुराण के मुताबिक, दून ने केदार खण्ड नामक क्षेत्र का हिस्सा बनवाया था।
- यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत तक अशोक के राज्य में शामिल था।
- 1815 तक लगभग दो दशकों तक यह गोरखाओं के कब्जे में था। अप्रैल 1815 में गोरखाओं को गढ़वाल क्षेत्र से हटा दिया गया और गढ़वाल को अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया।
- उस वर्ष में तहसील देहरादून का क्षेत्र अब सहारनपुर जिले में शामिल किया गया था।
- 1825 में, हालांकि, यह कुमाऊ डिवीजन में स्थानांतरित किया गया था।
- 1828 में, देहरादून और जौनसर भाबर को एक अलग डिप्टी कमिश्नर के पद पर रखा गया और 1892 में देहरादून जिले को कुमाऊं डिवीजन से मेरठ डिवीजन में स्थानांतरित कर दिया गया।
- 1842 में, दून सहारनपुर जिले से जुड़ा हुआ था और जिले के कलेक्टर के अधीनस्थ एक अधिकारी के अधीन रखा गया था, लेकिन 1871 से इसे अलग जिले के रूप में प्रशासित किया जा रहा है।
- 1968 में जिले को मेरठ प्रभाग से निकाला गया और गढ़वाल प्रभाग में शामिल किया गया।
- जिले में बोली जाने वाली मुख्य भाषाएं हिंदी, सिंधी, पंजाबी, गढ़वाली और उर्दू हैं।
- देहरादून को दो अलग-अलग हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है, अर्थात् मेंटन पथ और उप-माउंटन पथ।
- उत्तराखण्ड अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र की स्थापना वर्ष 2005 में देहरादुन मे की गयी थी।

Cartographer/ Draftman-17

कुमाऊं मंडल के जिले

पिथौरागढ़ जिला

- पिथौरागढ़ जिला भारत के उत्तराखंड राज्य का सबसे पूर्वी हिमालयी जिला है। यह प्राकृतिक रूप से उच्च हिमालयी पहाड़ों, बर्फ से ढकी चोटियों, दर्रों, घाटियों, अल्पाइन घास के मैदानों, जंगलों, झरनों, बारहमासी नदियों, ग्लेशियरों और झरनों से घिरा हुआ है।
- पिथौरागढ़ जिले की स्थापना 24 फरवरी, 1960 ई० को हई थी। **DOE-Guard (Secretariat)-21**
- क्षेत्र की वनस्पतियों और जीवों में समृद्ध पारिस्थितिक विविधता है। चंद साम्राज्य के उत्कर्ष काल में पिथौरागढ़ में कई मंदिर और किलों का निर्माण हुआ था ।

- पिथौरागढ़ जिले की संपूर्ण उत्तरी और पूर्वी सीमाएं अंतरराष्ट्रीय हैं, यह भारत के उत्तर सीमा पर एक राजनीतिक रूप से संवेदनशील जिला है।
- तिब्बत से सटे अंतिम जिला होने के कारण, लिपुलख, कुंगिबिंगरी, लंपिया धुरा, लॉई धूरा, बेल्चा और केओ के पास तिब्बत के लिए खुले रूप में काफी महत्वपूर्ण सामरिक महत्व है।
- पिर्थौरागढ़ का उत्तर-पूर्वी भूखण्ड, प्राचीनकाल में सीरा राज्य कहलाता था। **ASWO-2018**
- पिथौरागढ़ का पुराना नाम सोरघाटी है
- पिथौरागढ़ शहर समुद्र तल से 1645 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।
- यह जिले 29.4 डिग्री से 30.3 डिग्री उत्तर अक्षांश और 80 डिग्री से 81 डिग्री पूर्वी देशांतर के बीच मध्य हिमालय के पूर्वी और दक्षिणी भाग पर स्थित है।

बागेश्वर जिला

- बागेश्वर उत्तर भारत में उत्तराखंड राज्य का एक जिला है। बागेश्वर का शहर जिला मुख्यालय है। बागेश्वर का जिला 1997 में स्थापित किया गया था। इससे पहले, बागेश्वर अल्मोड़ा जिले का हिस्सा था।
- बागेश्वर जिला उत्तराखंड के पूर्वी कुमाऊं क्षेत्र में स्थित है, इसके पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में चमोली जिला, पूर्वोत्तर और पूर्व में पिथौरागढ़ जिला और दक्षिण में अल्मोड़ा जिला स्थित है।
- यह क्षेत्र, जो अब बागेश्वर जिले का रूप लेता है, ऐतिहासिक रूप से दानपुर के रूप में जाना जाता था, और 7वीं शताब्दी के दौरान कत्यूरी वंश का शासन था। 13वीं शताब्दी में कत्यूरी साम्राज्य का विघटन हुआ।
- 1565 में, राजा कल्याण चंद ने पाली, बरहमंदल और मानकोट के साथ दमनपुर को कुमाऊं में शामिल किया।
- 1791 में इस पर नेपाल के गोरखाओं ने हमला किया और कब्जा कर लिया।
- गोरखाओं ने इस क्षेत्र पर 24 वर्षों तक शासन किया और बाद में 1814 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने पराजित किया, और 1816 में सुगौली संधि के हिस्से के रूप में कुमाऊं को ब्रिटिशों को सौंपने के लिए मजबूर किया गया।
- बागेश्वर को 1974 में एक अलग तहसील बनाया गया था और 1976 में इसे परगना घोषित किया गया था, इसके बाद औपचारिक रूप से एक बड़े प्रशासनिक केंद्र के रूप में अस्तित्व में आया।
- 1985 से, यह घोषणा करने की मांग अलग-अलग पार्टियों और क्षेत्रीय लोगों के एक अलग जिले शुरू हुई, और अंत में, सितंबर 1997 में, बागेश्वर को उत्तर प्रदेश का नया जिला बनाया गया।

अल्मोड़ा जिला

- अल्मोड़ा जिला, उत्तराखंड राज्य, भारत के कुमाऊं प्रभाग में एक जिला है। मुख्यालय अल्मोड़ा में है यह समुद्र तल से 1,638 मीटर ऊपर है।
- अल्मोड़ा का शहर पूर्व में पिथौरागढ़ जिले, पश्चिम में गढ़वाल क्षेत्र, उत्तर में बागेश्वर जिला और दक्षिण में नैनीताल जिला है।
- अल्मोड़ा का पहाड़ी स्थल पहाड़ की एक घोड़े की नाल के आकार की रिज पर स्थित है, जिसमें पूर्वी भाग को तालिफाट कहा जाता है और पश्चिमी को सेलिफाट के रूप में जाना जाता है।
- अल्मोड़ा का परिदृश्य हर साल पर्यटकों को हिमालय, सांस्कृतिक विरासत, हस्तशिल्प और भोजन के अपने विचारों के लिए आकर्षित करता है, और कुमाऊं क्षेत्र के लिए एक व्यवसाय केंद्र है।
- चंद वंश के राजाओं द्वारा विकसित, बाद में इसे बनाए रखा गया और आगे ब्रिटिश शासन ने विकसित किया।
- प्राचीनतम नगर अल्मोड़ा, इसकी स्थापना से पहले, कत्यूरी राजा बालिकदेव के कब्जे में था। उन्होंने इस देश के प्रमुख हिस्से को एक गुजराती ब्राह्मण श्री चंद तिवारी को दान दिया।
- बाद में जब बारामंडल में चन्द साम्राज्य की स्थापना हुई थी, तब कलोयान चंद ने 1568 में अल्मोड़ा शहर की स्थापना की थी। **UK PCS-2021**

- चंद राजाओं के दिनों में इसे राजापुर कहा जाता था। प्राचीन राजस्थान तांबे की कई जगहों पर भी 'राजपुर' का नाम दिया गया है।
- 1929 में गाँधी जी ने अपने कौसानी प्रवास के दौरान यहाँ पर 'अनासक्ति योग' नाम से गीता की भूमिका लिखी। गांधी जी ने 'कोसानी' को 'भारत का स्विटजरलैण्ड कहा है।

UK PCS-2004-05

- अल्मोड़ा शहर कुमाऊं जिले का प्रशासनिक मुख्यालय था; यह 1815 में एंग्लो-गोरखा युद्ध में गोरखा सेना की हार और सुगौली की 1816 संधि के बाद 1815 में बनाया गया था।
- कुमाऊं जिले में काशीपुर में मुख्यालय के साथ तराई जिले को छोड़कर पूरा कुमाऊं डिवीजन शामिल था।
- 1837 में, गढ़वाल को मुख्यालय पौड़ी में एक अलग जिला बनाया गया।
- नैनीताल जिला 1891 में कुमाऊं जिले से बना हुआ था और कुमाऊं जिला को उसके मुख्यालय के बाद अल्मोड़ा जिला का नाम दिया गया था।
- 1960 के बागेश्वर जिले में, पिथौरागढ़ जिले और चंपावत जिले का अभी तक गठन नहीं हुआ था और अल्मोड़ा जिले का हिस्सा थे।
- पिथौरागढ़ जिले को 24 फरवरी 1960 को अल्मोड़ा से बना दिया गया था और 15 अगस्त 1997 को बागेश्वर जिला बना|

चंपावत जिला

- चंपावत जिला पूर्व में अल्मोडा जिले का एक हिस्सा था। 1972 में पिथोरागढ़ जिले के तहत यह हिस्सा आ गया। 15 सितंबर 1997 में चंपावत को एक स्वतंत्र जिला घोषित किया गया था।
- उत्तराखण्ड में संस्कृति और धर्म की उत्पत्ति की जगह के रूप में उत्तराखंड में चंपावत को जाना जाता है। चम्पावत भूमि नागा और हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित किन्नर का घर जाना जाता है।
- चंपावत जिला उत्तराखंड राज्य के 13 जिलों में से एक है। चंपावत जिले का प्रशासकीय मुख्यालय चम्पावत में है।
- यह राज्य की राजधानी देहरादून की 266 किमी पश्चिम दिशा में स्थित है। चंपावत जिले की आबादी लगभग 259648 है | यह आबादी से राज्य में 12वां सबसे बड़ा जिला है।
- उत्तराखण्ड में खादी उद्योग का सर्वाधिक संकेंद्रण चम्पावत जिले में स्थित है। **UK PCS-2006**
- चंपावत उत्तराखंड राज्य में पूर्वी कुमाऊ प्रभाग में स्थित है। इस क्षेत्र के पूर्व में नेपाल क्षेत्र, दक्षिण में उधम सिंह नगर जिला, पश्चिम में नैनीताल जिला और उत्तर-पश्चिम में अल्मोडा जिला स्थित है।
- चम्पावत पूर्व में चंद शासकों की राजधानी रही है। उन्होंने अपनी प्राचीन राजधानी में कई मंदिरों और प्राचीन स्मारकों का निर्माण किया है।
- उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिलें में आकाशवाणी केन्द्र स्थित है। अल्मोड़ा में स्थित आकाशवाणी केन्द्र को वर्ष 1986 में स्थापित किया गया था। **Forest Arakshi-2015**
- बालेश्वर, देवीधुरा, पंचेश्वर, पवनगिरी मंदिर कुछ ऐसे वास्तुशिल्प भवन हैं जो चंद वंश द्वारा निर्मित हैं। इस क्षेत्र में जंगलों का व्यापक घनत्व है, जो लाखों जंगली जानवरों का निवास स्थान है।
- जिम कार्बेट की किताब, "कुमाऊ के नरभक्षी" चम्पावत के जंगली जीवन से संबंधित है जो उन्होंने यहाँ देखा और अनुभव किया था ।
- जनगणना के अनुसार, उत्तराखंड राज्य में चम्पावत दूसरा कम आबादी वाला क्षेत्र माना जाता है।
- तहसील: बाराकोट, चम्पावत, लोहघाट, पाटी और पूर्णिगारी, चंपावत के प्रमुख स्थान हैं |औपचारिक रूप से इस क्षेत्र का गठन 15 दिसम्बर 1997 को मायावती ने किया था।
- चंपावत जिला, भौगोलिक दृष्टि से तराई, शिवालिक और उच्च पर्वत श्रृंखलाओं में विभाजित है | चम्पावत समुद्र तल से 200-2000 मीटर के बीच स्थित है जिसमें अलग-अलग प्रकार की जलवायु और विभिन्न ऊंचाइयों में मौसम का अनुभव होता है।